# नई वारसा संधि

इंडियन एक्सप्रेस

पेपर-II
(अंतर्राष्ट्रीय संबंध)

पिछले हफ्ते, डेनमार्क, फिनलैंड, नॉर्वे और स्वीडन के वायु सेना प्रमुख रूसी खतरे का मुकाबला करने के लिए अपने वायु रक्षा को एकीकृत करने पर सहमत हुए। साथ में, उनके पास लगभग 300 लड़ाकू विमान है और चार देशों का लक्ष्य अंततः एक बल के रूप में काम करना है। ऐसा अक्सर नहीं होता है कि एक देश अपने सशस्त्र बलों को दूसरे के साथ जोड़ना चाहता है। नॉर्डिक कदम यूक्रेन पर रूसी आक्रमण के बाद उत्तरी यूरोप में असुरक्षा की भावना से निपटने के बारे में है। यह मध्य यूरोप में हो रहे कई विकासों में से एक है जो महाद्वीप की भू-राजनीति को बदलने का वादा करता है। साथ में, उभरती हुई सुरक्षा व्यवस्थाओं को "नया वारसा पैक्ट" कहा जा रहा है, क्योंकि उनमें से अधिकांश पोलैंड पर केंद्रित हैं।

## नई वारसा संधि

शीत युद्ध के दौरान, जब पोलैंड पूर्वी यूरोपीय देशों के सोवियत ब्लॉक का हिस्सा था, तो उसने पश्चिमी सैन्य गठबंधन, उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन का मुकाबला करने के लिए स्थापित वारसा संधि के मुख्यालय की मेजबानी की थी। भू-राजनीति के चाप ने मध्य यूरोप में पूर्ण चक्र बदल दिया है क्योंकि "नई वारसा संधि" रूसी संशोधनवाद का विरोध करने के लिए पूर्व में अपनी बंदूकों को प्रशिक्षित करती है। भारत सहित दुनिया के कई हिस्सों में, बहस ने नाटो के परिहार्य विस्तार के लिए रूस की अपरिहार्य प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप यूक्रेन युद्ध को फंसाया है। मध्य यूरोप के हितों और सरोकारों के लिए इस सरल कथा में बहुत कम जगह है। मध्य यूरोप की रूसी विस्तारवाद की ऐतिहासिक यादें वास्तविक हैं, वे इसके जीवित इतिहास का हिस्सा हैं। आज, मध्य यूरोप के लोग अपनी नियति पर नियंत्रण पाने के लिए उत्सुक हैं और पिछले एक साल में उन्होंने संकेत दिया है कि उनके पास ऐसा करने के लिए राजनीतिक इच्छाशक्ति और एजेंसी है।

## रूसी आक्रमण का विरोध एवं पुरानी वारसा संधि

रूसी आक्रमण के खिलाफ यूक्रेन का आश्चर्यजनक और महंगा प्रतिरोध निश्चित रूप से पश्चिमी हथियारों की प्रचुर आपूर्ति से सुगम हुआ है। लेकिन अधिक गहराई से, प्रतिरोध राष्ट्रवादी यूक्रेन के राजनीतिक इनकार के बारे में है जो औपचारिक या अनौपचारिक प्रभाव के रूसी क्षेत्र में समाहित हो जाता है। रूस के प्रति यूक्रेन का गहरा अविश्वास यूक्रेन के सभी मध्य यूरोपीय पड़ोसियों द्वारा नहीं तो व्यापक रूप से साझा किया जाता है। विक्टर ओर्बन का हंगरी एक स्पष्ट अपवाद है। लेकिन पूर्वी यूरोप के सोवियत प्रभुत्व को चुनौती देने के लिए हंगरी पुराने वारसा संधि के पहले राष्ट्रों में से एक था। 1956 में हंगेरियन विद्रोह, निश्चित रूप से, सोवियत लाल सेना द्वारा कुचल दिया गया था।

### उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन

**(North Atlantic Treaty Organization- NATO)**

सोवियत संघ द्वारा बर्लिन की घेराबंदी ने पश्चिम की सैन्य कमजोरी को प्रकट किया था जिससे वे निश्चित तौर पर सैन्य तैयारी करने को प्रेरित हुए। परिणामस्वरूप वर्ष 1948 में मुख्य रूप से पश्चिमी यूरोप के देशों ने युद्ध के मामले में सैन्य सहयोग का वादा करते हुए ब्रुसेल्स रक्षा संधि (Brussels Defence Treaty) पर हस्ताक्षर किये। बाद में ब्रुसेल्स रक्षा संधि में अमेरिका, कनाडा, पुर्तगाल, डेनमार्क, आइसलैंड, इटली और नॉर्वे भी शामिल हो गए तथा अप्रैल 1949 में नाटो (NATO) का गठन हुआ। नाटो देश इनमें से किसी एक पर भी हमले को सभी देशों पर हमले के रूप में देखने और अपने सैन्य बलों को एक संयुक्त कमान के तहत रखने पर सहमत हुए।

Committed To Excellence

### वारसा संधि (Warsaw Pact)

नाटो में पश्चिम जर्मनी के शामिल होने के तुरंत बाद ही सोवियत संघ और उसके आश्रित राज्यों के बीच वारसा संधि (The Warsaw Pact, 1955) पर हस्ताक्षर किये गए। यह एक पारस्परिक रक्षा समझौता था जिसे पश्चिमी देशों ने पश्चिमी जर्मनी की नाटो सदस्यता के विरुद्ध सोवियत प्रतिक्रिया के रूप में देखा था। इसमें सम्मिलित देश सोवियत संघ, पोलैंड, पूर्वी जर्मनी, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, रोमानिया और बुल्गारिया है।

## भारत तथा रूस एवं उसके पड़ोसी देशों के साथ संबंध

कभी भौगोलिक रूप से मॉस्को से हटाई गई दिल्ली रूसी इतिहास के बारे में सौम्य नजरिया रखती है। लेकिन रूस के निकटवर्ती पड़ोसी, जिनके रूस के साथ बहुत घनिष्ठ लेकिन तनावपूर्ण संबंध रहे हैं, एक बहुत अलग दृष्टिकोण रखते हैं। बीजिंग, जो आज मॉस्को का करीबी सहयोगी है, का जारवादी रूस और साथ ही सोवियत संघ के साथ अक्सर संघर्ष होता रहा है। यूक्रेन में युद्ध और यूरोप और दुनिया के लिए इसके भू-राजनीतिक परिणामों से निपटने के लिए मध्य यूरोपीय दृष्टिकोण को समझना किसी भी भारतीय दीर्घकालिक रणनीति के लिए महत्वपूर्ण है। कहा जाता है कि आप कहाँ खड़े हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप कहाँ बैठते हैं। मॉस्को पर मध्य यूरोपीय विचार न केवल भारत के विचारों से भिन्न हैं, बल्कि यूरोप के पश्चिमी भाग जैसे फ्रांस और जर्मनी में भी हैं, जो रूस के साथ सीमा साझा नहीं करते हैं।

## क्रीमिया का विलय एवं रूसी खतरा

मध्य यूरोपीय लोगों की शिकायत है कि 2014 में क्रीमिया प्रायद्वीप के विलय के बाद पश्चिमी यूरोपीय लोगों ने रूसी खतरे की उनकी बार-बार की चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया। निश्चित रूप से, फरवरी 2022 में यूक्रेन पर हमले के बाद यूरोप एक साथ आ गया है। लेकिन पश्चिम और मध्य के बीच बड़े अंतर है यूक्रेन में शांति की शर्तों पर यूरोप और यूरोपीय सुरक्षा वास्तुकला में रूस की दीर्घकालिक भूमिका भले ही केन्द्रीय यूरोपीय रूस से सुरक्षा के लिए नाटो को देखते हैं, वे पश्चिम यूरोप और रूस के बीच संभावित समझौतों के लिए अपने भविष्य को सौंपने के इच्छुक नहीं हैं। मध्य यूरोपीय लंबे समय से अपने बड़े यूरोपीय पड़ोसियों, विशेष रूप से रूस और जर्मनी के लिए रौंदने का मैदान रहे हैं। मध्य यूरोप में महान शक्ति मानचित्र-निर्माण ने बार-बार महाद्वीप के मध्य में राष्ट्रों की सीमाओं और पहचान को पुनर्परिभाषित किया।

## रूसी खतरों के विरूद्ध गठजोड़

यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस क्षेत्र के राज्य अब रूस के विरुद्ध प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए स्थानीय गठजोड़ बना रहे हैं। वे अपने उप-क्षेत्रीय सुरक्षा प्रयासों को वापस लेने के लिए ब्रिटेन और अमेरिका की ओर भी देख रहे हैं। जैसा कि कैंब्रिज यूनिवर्सिटी के सेंटर फॉर जियोपॉलिटिक्स के टिमोथी लेस कहते हैं, "रूसी खतरे, पश्चिमी यूरोपीय निष्क्रियता और एंग्लो-अमेरिकन समर्थन के संयोजन ने पूर्वी यूरोप में गतिशीलता को बदलना शुरू कर दिया है जो अब एक सुसंगत क्षेत्रीय गठबंधन नाटो भीतर और बाहर दोनों में काम कर रहे हैं। 2014 में रूस द्वारा क्रीमिया प्रायद्वीप पर नियंत्रण प्राप्त करने के तुरंत बाद यह प्रयास शुरू हो गया था।

- 2015 में, नौ केंद्रीय यूरोपीय राज्यों ने तथाकथित **"बुखारेस्ट नाइन"** बनाने के लिए रोमानियाई राजधानी में एक साथ मिल गए। ये नौ देश बुल्गारिया, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, हंगरी, लातविया, लिथुआनिया, पोलैंड, स्लोवाकिया और रोमानिया हैं। ये देश या तो सोवियत संघ या वारसा संधि का हिस्सा थे।

- 2016 में, **"थ्री सीज इनिशिएटिव"** नामक एक नए क्षेत्रीय मंच का जन्म हुआ, जिसने तीन राज्यों ऑस्ट्रिया, क्रोएशिया और स्लोवेनिया को बुखारेस्ट नाइन में जोड़ा। थ्री सीज इनिशिएटिव का उद्देश्य बाल्टिक सागर से काला सागर तक चलने वाले मध्य यूरोपीय बेल्ट में राजनीतिक और आर्थिक सहयोग को मजबूत करना है।

- 2020 में, पोलैंड, लिथुआनिया और यूक्रेन को मिलाकर **'लुबलिन ट्राएंगल'** नामक एक छोटा समूह बनाया गया था। यह साझा इतिहास और सांस्कृतिक समानता वाले तीन राज्यों के बीच राजनीतिक, आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देना चाहता है।

## पोलैंड की केन्द्रीय भूमिका

इन नई व्यवस्थाओं के केन्द्र में पोलैंड है। 1989-91 के दौरान पूर्वी ब्लॉक के टूटने के बाद से पोलैंड का आर्थिक परिवर्तन काफी तेजी से हुआ है। यह अब अपने सशस्त्र बलों को दोगुना करके, अपनी सेना का आधुनिकीकरण करके और रूस के खिलाफ यूक्रेन की लड़ाई का समर्थन करने के लिए क्षेत्रीय प्रयासों का नेतृत्व करके एक प्रमुख सैन्य शक्ति बन रहा है। यूरोप का गुरुत्व केंद्र पूर्व की ओर बढ़ रहा है और वारसा में लंगर डाले हुए है। अपने दम पर, पोलैंड नई रणनीति को बनाए नहीं रख सकता है; इसे उप-क्षेत्रीय गठबंधन बनाने में अपने मध्य यूरोपीय पड़ोसियों के साथ मिलकर काम करने की जरूरत है। जबकि पोलैंड और मध्य यूरोपीय अपने पश्चिमी यूरोप समकक्षों से सावधान हैं, वे एंग्लो-अमेरिकी शक्तियों के मजबूत समर्थन से उत्साहित हैं। लंदन, संभवतः अमेरिकी समर्थन के साथ, उत्तर और मध्य यूरोप में कई सुरक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर करके यूरोपीय सुरक्षा के लिए ब्रिटेन की निरंतर प्रासंगिकता को प्रदर्शित करने के लिए यूक्रेन संकट को जब्त कर लिया है। ब्रिटेन आज मध्य यूरोप के सबसे पसंदीदा देशों में शीर्ष पर है।

## संयुक्त राज्य अमेरिका एवं यूरोप

अमेरिका, जो अपने क्षेत्रीय साझेदारों को अपनी सुरक्षा के लिए बड़ी जिम्मेदारी लेने के लिए उत्सुक है, मध्य यूरोप में नई राजनीतिक/सैन्य संरचनाओं के निर्माण का स्वागत करता है जो नाटो और यूरोपीय संघ के पार और पूरक दोनों हैं। इससे भी अधिक महत्वपूर्ण, मध्य यूरोप का उदय रूसी चुनौती से निपटने पर पेरिस और बर्लिन में राजनीतिक झिझक को संतुलित करता है। मध्य यूरोप के पास "रणनीतिक स्वायत्तता" के लिए फ्रांसीसी महत्वाकांक्षाओं के लिए समय नहीं है और वह अपने क्षेत्र को सुरक्षित करने में एंग्लो-अमेरिकी शक्तियों की अधिक भागीदारी चाहता है।

## भारत और यूरोप

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के कार्यकाल में देखा गया है कि दिल्ली ने मध्य यूरोपियों और नॉर्डिक्स सहित यूरोप को लुभाने में काफी कूटनीतिक ऊर्जा खर्च की है। सत्तारूढ़ भाजपा ने भी इस क्षेत्र में रूढ़िवादी दलों के साथ कुछ वैचारिक संबंध खोजे हैं। लेकिन रूस के यूक्रेन युद्ध ने भारत की केंद्रीय यूरोपीय रणनीति को जटिल बना दिया है। भारत, जिसकी रूस के साथ लंबे समय से चली आ रही रणनीतिक साझेदारी से उत्पन्न होने वाली वास्तविक मजबूरियाँ हैं, को आवश्यक रूप से मध्य यूरोपीय राज्यों के साथ फिर से जुड़ने का एक रास्ता खोजना होगा जो यूरोप के रणनीतिक मानचित्र को पुनर्व्यवस्थित करने के रास्ते पर हैं। मॉस्को के साथ अपने संबंधों को अलग करने से मध्य यूरोप और भारत के बीच पारस्परिक रूप से लाभकारी सहयोग के लिए व्यावहारिक रास्ते खुल सकते हैं।

### संभावित प्रश्न (Expected Question)

**प्रश्न : 'थ्री सीज इनिशिएटिव' (3SI) के सन्दर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-**

1. 3SI यूरोप में सीमा पार ऊर्जा, परिवहन और डिजिटल बुनियादी ढाँचे का विस्तार करने तथा एड्रियाटिक सागर, बाल्टिक सागर एवं काला सागर के बीच के क्षेत्र में आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिये एक क्षेत्रीय प्रयास है।
2. बारह देश (ऑस्ट्रिया, बुल्गारिया, क्रोएशिया, चेक गणराज्य, एस्टोनिया, हंगरी, लातविया, लिथुआनिया, पोलैंड, रोमानिया, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया) जो सभी यूरोपीय संघ के सदस्य हैं, 3SI में भाग लेते हैं।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 और न ही 2

**Que. With reference to the Three Seas Initiative (3SI), consider the following statements –**

1. 3SI is a regional effort to expand cross-border energy, transport and digital infrastructure in Europe and to promote economic development in the region between the Adriatic Sea, the Baltic Sea and the Black Sea.
2. Twelve countries (Austria, Bulgaria, Croatia, Czech Republic, Estonia, Hungary, Latvia, Lithuania, Poland, Romania, Slovakia and Slovenia) that are all members of the European Union participate in 3SI.

Which of the statements given above is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

**उत्तर : C**

### संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

**प्रश्न : हाल के वर्षों में यूरोप में कई संगठनों ने जन्म लिया है इन उभरती हुई सुरक्षा व्यवस्थाओं को "नया वारसा पैक्ट" कहा जा रहा है, क्योंकि उनमें से अधिकांश पोलैंड पर केंद्रित हैं। विश्लेषण कीजिये। (250 शब्द)**

**उत्तर का दृष्टिकोण :-**

- ❖ हाल के वर्षों में यूरोप में उत्पन्न संगठनो को चर्चा कीजिए।
- ❖ इन उभरती हुई सुरक्षा व्यवस्थाओं को "नया वारसा पैक्ट" क्यों कहा जा रहा है चर्चा कीजिए।
- ❖ पोलैंड की केंद्रीय भूमिका को बताएं।
- ❖ संतुलित निष्कर्ष दीजिए।

**नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।**